M.A Prev.

CC-1

टिप्पणियाँ

स्वर → जिन वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता अपेक्षित नहीं होती, वे स्वर कहलाते हैं। प्राकृत में स्वर दो प्रकार के हैं- ह्रस्व और दीर्घ। अ, इ, उ, ए, ओ ह्रस्व स्वर हैं। आ, ई, ऊ, ऐ औ दीर्घ स्वर कहलाता है।

व्यंजन → जिन वर्णों के उच्चारण करने में स्वर वर्णों की सहायता लेनी पड़ती है वे व्यंजन कहलाते हैं। प्राकृत में व्यंजनों की संख्या 32 है (कवर्ग) क ख ग घ ङ। (चवर्ग) च छ ज झ ञ। (टवर्ग) ट ठ ड ढ ण, (तवर्ग) त थ द ध न। (पवर्ग) प फ ब भ म। (अन्तस्थ) य र ल व। (उष्माक्षर) स ह (अनुस्वार) ं।

अनुस्वार → जिन शब्दों के अन्त्य व्यंजन का लोप होता है उनके अन्त्य स्वर के ऊपर अनुस्वार का आगम होता है। जैसे पृथक् = पिहं इस उदाहरण में अन्त्य व्यंजन क् का लोप हुआ है और पृ में संयुक्त ऋकार के स्थान पर इकारादेश हुआ है तथा 'थ' के स्थान पर ह हो जाने से पिहं बना है।

ध्वनि परिवर्तन → ध्वनि परिवर्तन से आशय है किसी ध्वनि का बदलकर कुछ से कुछ हो जाना। जैसे 'घोटक' से घोड़ा बनने में 'ट' परिवर्तित होकर 'ड' हो गया है या दधि से दही बनने में 'ध' परिवर्तित होकर 'ह' हो गया है।

ध्वनि परिवर्तन मुख्यतया दो प्रकार के होते हैं स्वयम्भू और परोद्‌भूत। भाषा के प्रवाह में स्वयम्भू परिवर्तन किसी विशेष अवस्था या परिस्थिति की अपेक्षा किये बिना कभी भी घटित हो जाते हैं। जैसे- वक्रम् -- वंकं। गुच्छम् -- गुच्छं। स्वयंभू परिवर्तन स्वर और व्यंजन दोनों में होते हैं। परोद्‌भूत ध्वनि परिवर्तन के अनेक उदाहरण प्राकृत में पाये जाते हैं। प्राकृत शब्द के अन्त में व्यंजन नहीं आते जैसे - पश्चात् -- पच्छा। यावत् -- जाव। सम्यक् -- सम्मं।

यश्रुति → प्राकृत में यश्रुति पायी जाती है। इसका भाषा वैज्ञानिक हेतु यह है कि प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के मूल अक्षर-भार को सुरक्षित रखता है, संस्कृत में एक पद में एक साथ दो स्वर ध्वनियाँ जहाँ पायी जाती है। उनमें सन्धि हो जाता है। पर प्राकृत में दो स्वर ध्वनियाँ एक साथ भिन्न अक्षर प्रक्रियाँ का सम्पादन करती हुई पायी जाती है। सम्भवतः स्वरसन्धि की इस ~~प्रवृत्ति को रोक~~ प्रवृति को रोकने के लिए यश्रुति का विधान किया गया है। जैसे - ओ अणं - ओयणं।

आचार्य हेमचन्द्र ने बताया है कि अ या उसके दीर्घ रूप आ के पूर्व तथा पर यश्रुति का प्रयोग होता है - क, ग, च, ज आदि का लोप होने पर अं, आं, अ, आ के बीच में यश्रुति का प्रयोग होता है। यश्रुति में य का उच्चारण लघुप्रयत्नोत्त' होता है।

व्यंजन परिवर्तन → प्राकृत-भाषा में शब्द के प्रारम्भ में आने वाले न, य, श और ष को छोड़कर अन्य सभी व्यंजनों में सामान्यतया कोई परिवर्तन नहीं होता। उक्त 'न' आदि चार व्यंजनों में परिवर्तित हो जाता है -

न = ण - नगरं - णयरं। य = ज - यश: - जसो।

संस्कृत की क ध्वनि का प्राकृत में ख, ग, च, भ, म, व और ह में परिवर्तित होता है। क = ख - कर्परम = खप्परं। क = ग - अमुकः - अमुगो। क = च - किरातः = चिलाओ। क = म - चन्द्रिका - चंदिमा

संस्कृत की ख ध्वनि प्राकृत में क में बदल जाती है। जैसे - शृंखलम = संकलं।

संस्कृत के ज वर्ण प्राकृत में झ में बदल जाते हैं। जैसे जटिल: - जडिलो - झडिलो।